बन्धन

कहानी

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

बन्धन

कहानी

श्रीमती राजलक्ष्मी शिवहरे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-038-4"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक - प्रीति समकित सुराना

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **श्रीमती राजलक्ष्मी शिवहरे**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

BANDHAN BY RAJLAXMI SHIVHARE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में आविा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

बन्धन

वह शिक्षा अधिकारी था नाम था उसका राणा परिहार। पर वह राजा के नाम से गजल कहता था। वह कोमल मन का, सुदर्शन व्यक्तित्व का मालिक था। सहज होकर सबमें घुल-मिल जाता। एक स्कूल में वह इंस्पेक्शन के लिए गया था। वहाँ उसे मिली विधि। स्कूल की प्राचार्या। सुंदर सी, नाजुक सी, गौर वर्ण। कलफ लगी हुई साड़ी और ऊपर बंधा हुआ जूड़ा उसके व्यक्तित्व को और भी निखार रहे थे।

रात में वह पार्टी में मिले। राणा ने उसे देखा और पास आया।

कैसीं है आप ?

ये स्कूल नहीं है। विधि जैसे उसे पहचानने से इंकार कर रही थी। ये गाँव है यहाँ जरा से में बात का बतंगढ़ बन जाता है।

मैं इस गाँव में नया हूँ। यह पार्टी मेरी बुआ ने दी है। लगा आप उनकी परिचित हैं बस इसीलिए और कुछ पूछना भी था .....

क्या?

मैंने देखा बड़े-बड़े स्कूलों में वहाँ सारी सुविधायें होती हैं पर परीक्षा परिणाम खोके में। इस छोटे से गाँव में जहां सारी सुविधाओं का अभाव है पर परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत कैसे .....?

विधि ने उसे देखा प्रशंसा कर रहा है या पर वह जवाब दे पाती तभी आशु आ गया .....

राजा यहाँ क्या कर रहे हो। आओ तुम्हें अपने दोस्तों से मिलाऊँ।

'राजा' गजलकार विधि उसकी प्रशंसक थी। ए.डी.आय.एस. और साहित्यकार। बाप रे बाप कैसे एक-एक फाइल चैक कर रहा था। स्कूल में एक कप चाय तक नहीं पी।

विधि उसे ही देख रही थी यह राजा ने देख लिया था। जब वह अकेला हुआ तो विधि उसके पास आई। आप 'राजा' हैं .....

हां आशू ने यही परिचय तो दिया।

माफ करिये मैंने आपको पहचाना नहीं था।

याने अब मेरे प्रश्नों का जवाब देंगी।

हां यदि गजल सुनायेंगे .....

जरूर सुनाऊँगा ..... मुझे नहीं पता था कि इस गांव में मुझे पढ़ने वाला ही नहीं वरन् मेरा प्रशंसक भी कोई होगा।

आसमां से आगे जहाँ और भी है।

एतबार कर लो हमको तुम्हीं से प्यार है।

ये वाली ...

अवश्य

विधि चलो भाभी बुला रही है, बच्चे को झूले में डालो।

आशु को सात साल के बाद बेटा हुआ था सो आज चौक की रस्मक पूरी हो रही थी।

खाने के बाद राजा की ग़ज़ल भी होगी। गांव में लाईट आती जाती थी सो जल्दी रस्में पूरी हुई। विधि सबको खाना परोस रही थी।

दोपहर में तो एक समोसा भी नहीं खाया था। उस समय ड्यूटी पर था पर अब जमकर भूख लगी है।

मुझे खीर पसंद है विधि जी।

शहर में शुद्ध दूध मिलता कहाँ है।

आज तुम्हें स्कूल में काम था। मेरी शादी को चालीस साल हुये पहली बार गाँव आये हो बुआ बोली।

सच है बुआ समय ही नहीं मिला। पर ये गाँव बेहद खूबसूरत है। वह विधि को देख रहा था।

ये मेरी ननद की बेटी है इसी गाँव में ब्याही है। ननदजी की तबियत ठीक नहीं थी सो दामादजी उन्हें अस्पताल लेकर गये हैं। ये विधि की बेटी है।

आश्चर्य से राजा ने बुआ की गोद में सोई बेटी को देखा।

ये विधि की बेटी। अभी भी विधि की सुंदर इकहरी देह, लम्बी सी कमर पर झूलती हुई वेणी उस पर मोगरे का गजरा काली साड़ी में एकदम सुंदर लग रही है विधि। रात चांदनी थी।

खाने के बाद 'राजा' की गजल हुई .....

एतबार कर लो तुम्ही से प्यार है.....

विधि ने नजरें झुका ली।

मामी नीलू सो गई है इसे सुला दूँ।

सुन विधि राणा को भी साथ लेती जा। यहाँ तो रात भर सोहरें गाई जायेंगी।
जी मामी
चलिये .....
आपको तकलीफ तो नहीं होगी।
नहीं।
और उसने राजा का बिस्तार दहलान में लगा दिया।
गरमी के दिन थे।
रात में राजा परेशान था। लाईट चली गई थी वह उठा मटके से पानी लेकर पीया।
तभी विधि आ गई।
यहाँ यही परेशानी है।
मेरे पास बैठो विधि
पता नहीं कब दोनों पास आ गये।
मेरी शादी हो चुकी हैं। ..... विधि ने कहा
मेरे भी दो बच्चे है। कुमार तो मैं भी नहीं।
और सारे बन्धन टूट गये और वे एक हो गये।

दूसरे दिन राजा जब जागा तो विधि दिखी नहीं। तभी आशु आ गया ..... माँ बुला रही है चल चाय पीने।
विधि कहाँ होगी ?
तभी उसके फोन की घंटी बजी।
मैं शहर आ गई हूँ। सासूमाँ भर्ती है। आप सो रहे थे इसलिये नहीं जगाया।
अजीब हो। मैं परेशान था, तुम दिखी नहीं। किस हास्पिटल में हो।
सिटी हास्पिटल में।
आता हूँ .....
बुआ ने बहुत रोकने की कोशिश की। तेरी ट्रेन तो रात में है। अभी क्यों जा रहा हैं?
आशु ने कहा ... मैं छोड़ देता हूँ।
नहीं स्कूल की गाड़ी से चला जाऊँगा।
वह तैयार होकर नागपुर आ गया, विधि ने उसे देखकर नजरें झुका लीं।
क्या हुआ है?
कुछ नहीं माइनर हार्ट अटैक है। मेरे पति महेन्द्र सिंह.....

तो आप हैं इसके इंस्पेक्टर। कल से घबरा रही थी जाने आप क्या लिखेंगे?
नहीं रिपोर्ट एक्सीलेंट हैं। मुझे नहीं पता था कि बुआ जी की भांजी है। इसलिये माताजी को देखने चला आया।
यही तो मानवता है।
वह माताजी से मिला।
आज छुट्टी हो जायेगी, ये लोग जरा से में घबरा जाते हैं।
विधि उसे बाहर तक छोड़ने आई।
विधि मुझे माफ कर देना। एक तो आशु ने जबरदस्ती पिला दी थी और चांदनी रात में तुम खूबसूरत भी बहुत लग रही थीं।
कोई बात नहीं रिर्पोट भेज दीजियेगा।
दिल्ली आना पसंद करोगी।
अभी नहीं नीलू छोटी है।
ये मेरी तरफ से एक उपहार है।
एक डब्बा उसने उसकी ओर बढ़ाया, उसने डिब्बा खोला, रिस्टवाच थी। हीरे लगे थे। रात में भी समय बताती है।
इतनी कीमती मुझे नहीं लेना।
प्लीज विधि
ठीक है उसने डिब्बा पर्स में डाल लिया।
जाता हूँ रात में ट्रेन है।
तभी महेन्द्र आ गये..... तुम्हें माँ बुला रही हैं।
खाना खाया आपने महेन्द्र ने पूछा
नहीं बुआ ने नाश्ता ही इतना करा दिया कि अब भूख नहीं है।
मामीजी ही नीलू को संभाल रहीं होगी।
अब चलूं अभी भी उसके पास स्कूल की जीप थी।
वह एक थियेटर में बैठ गया तीन से छह में।
दिल्ली पहुँच कर वह व्यस्त हो गया और स्कूल की रिर्पोट भेजना भूल गया।
सर यह रिमांइडर है।
ओह अभी भेज रहा हूँ।
रात में उसने विधि को फोन लगाया पर लगा नहीं। दूसरे दिन उसने स्कूल में फोन लगाया।

जी किसी ने कहा .....
विधि जी कहाँ है
जी उनकी सासू माँ नहीं रही वो छुट्टी पर हैं।
उन्हें बता दीजिएगा आज रिर्पोट भेज दी है।
सर! आप मैं दीपक, आप ने पहचाना।
सर सकुंल वाले रिर्पोट मांग रहे थे इसलिए वो रिमांडर भेजा था।
ठीक है कहकर राणा ने फोन रख दिया था।
तभी फोन बजा था .....
विधि मैंने कल फोन किया था
हाँ पर कल फोन मोबाइल आफ था।
कैसे हुआ सब।
बस अचानक तबियत बिगड़ी अभी दो दिन बाद स्कूल जाऊंगी।
रिर्पोट भेज दी है।
आभार।
विधि ने फोन रख दिया था।
जब भी वह उस रात के बारे में सोचता कभी ग्लानि होती। रश्मि भी खूबसूरत है हमेशा घर का ध्यान रखती हैं। बेटा एम.एस. कर रहा है। बेटी फैशन डिजाइन का कोर्स कर रही है। यह सोच रहा था कि पांच बजने वाले हैं घर जाये पर तभी फोन बजने लगा था।
हाँ बोल किशोर।
कल शाम को मेरी किताब का विमोचन है पाँच बजे।
कहाँ पर?
सेंट जेवियर्स के हाल में
आता हूँ।
किशोर वैसे तो फिजिक्सम पड़ता है पर उसे लिखने का बेहद शौक है। उसका लेखन बेहद कड़वा होता है।
बच्चे, जवान, बूढ़े सभी उसके लेखन का शिकार होते हैं। विशेषकर वो लड़कियां जो माता पिता का कहना नहीं मानती और जीवन भर रोती है।
वह दूसरे दिन स्कूल के हाल में पहुँचा तो किशोर ने कहा ..... बाहर जाकर निरूपमा जी को ले आते हैं.....

वे बाहर आये तभी निरूपमाजी कार से उतरीं। गठीला शरीर, गेहुंआ रंग, केश कंधे तक, माथे पर लाल बिन्दी। गले में चेन, हाथों में गुलाबी चूडिंया और साड़ी भी गुलाबी। राजा उन्हें देखता ही रह गया उसे लगा कोई प्रौढ़ महिला होगी। इतनी बड़ी उपन्यासकार।

आइये मैडम किशोर ने कहा....

क्या बात! कितना संतुलित रखा है अपने को इन्होने

ये मेरा मित्र राजा

कहीं गजल लिखते है वे तो नहीं।

जी! वही.....

तब तक वे हाल तक पहुँच चुके थे।

दीप प्रज्वलन के बाद सरस्वती वंदना हुई। अतिथियों के लिए स्वागत गीत हुआ।

'राजा' निरन्तर किशोर के साथ था। 'आकांक्षा' का विमोचन हुआ।

मुख्या अतिथि के पद से निरूपमा जी बोली- 'वैज्ञानिक होते हुए लेखन करना बड़ी बात है। मानव मन भटकता है और और की चाह में और हाथ का सुख, शांति भी गंवा देता है।

अचानक राजा को विधि की याद आ गई सब कुछ तो उसके पास फिर मन बार-बार विधि की चाह क्यो करता है?

अचानक राजा की आंखें निरूपमा की आंखों से जा मिली।

क्या हुआ कि राजा ने नजरें झुका ली। उसे लगा जैसे भीतर तक उन्हो ने देख लिया है कि मैं अभी अभी क्यु सोच रहा था।

किशोर ने अपनी दो कहानियाँ सुनाई- 'वह अपवित्र दलित थी। एक दिन पुजारी तालाब में नहाने गये और फिसल गये उनसे उठते ही नहीं बन रहा था।

उठा मुझे ....

नहीं मैं दलित हूँ आपका स्पर्श नहीं कर सकती। वह पंडित को छोड़कर आगे बढ़ गई।

सत्य है। हमेशा अपमान सहा है इस जाति ने। राजा ने सोचा।

दूसरी कहानी एक लड़की की थी जो भाग कर शादी करती है और कुछ सिक्कों में बेच दी जाती है।

अचानक किशोर ने अनुरोध किया कि मैं 'राजा' से अनुरोध करता हूँ कि वह गजल सुनाए ...

उसका तबस्सुम और बिखरी जुल्फें

घटा हो जैसे सावन की और छुपा हो कहीं चाँद

आओ प्यार से संवार दूँ फिर न कहना
रात चली गई आहिस्ता प्रिय तुम न आये।
बहुत तालियाँ बजी।
राजा अपने स्थान पर जब बैठे तो देखा निरूपमा देख रही थी प्रशंसा थी उसके नेत्रों में।
कुछ दिनों बाद राजा को फोन आया .....
मैं निरूपमा।
जी ... बोलिये
मेरी छोटी बहिन है। गजल लिखने की शौकीन है क्यो आप उसका मार्गदर्शन कर पायेंगो
जरूर मेरा आफिस तुगलक रोड़ पर है। बारह बजे के बाद भेज दीजियेगा।
वो चल नहीं पाती। दायें पैर से लाचार है। दायें हाथ से लिख भी नहीं पाती। पर वह एम. एस.सी. है। दिव्या उसका नाम है।
आपका घर कहाँ है?
इन्द्ररपुरी में।
कल इतवार है पाँच बजे आता हूँ।
राजा परेशान था। उसने किशोर को फोन लगाया कहाँ फंसा दिया....
जब निरूपमा जी ने तेरा फोन नंबर मांगा तो देना पड़ा।
दूसरे दिन राजा इन्द्र पुरी पहुँचे तो निरूपमा का नाम सुनते ही गार्ड ने पता बता दिया।
राजा जब पहुँचा तो बाई ने कहा 'मेम तो बाहर गई हैं पर जाते समय बोल गई थीं आप आने वाले हैं। दिव्या मेम बैठक में हैं'।
राजा ने दिव्या को देखा तो हैरान रह गया तुम तो मेरिट स्टुडेंट हो ना।
जी! आप हमेशा परीक्षा के समय आते थे।
आप गजल लिखते है दीदी बता रहीं थीं।
हाँ .....
आप बैठिए। तब तक बाई पानी ले आई थी।
सर फलाइतुन, रदीफ, शेर सब सीखना है आपसे।
चाय पीयेंगे सर, या ठंडा।
चाय चलेगी।
दिव्या बेहद सुन्दर थी, एक दम गुलाबी, बड़ी-बड़ी आंखे, लम्बी सी वेणी, नाजुक सी दुबली सी।

कितना दर्द है जीवन में।
तुमने जाब नहीं किया।
नहीं दीदी कहीं जाने नहीं देती।
वो अभी कहाँ हैं?
जी कवि सम्मेहलन में
चाय पीकर राजा ने दिव्यान को गजल की बारीकियाँ समझाईं। जैसे छंद में मात्रायें गीनी जाती हैं वैसे ही गजल में भी बस उसे ही फलाइतनु कहते हैं।
सर मैंने कुछ शेर लिखे है.....
तन्हां जिंदगी कटती नहीं
कैसे बसर होगी ये जिंदगी।
अरे ये सब शेर तो बढ़िया हैं। पर मात्राओं को सुधार लेंगे।
अब मैं चलूं।
सर बाई आपको छोड़ देगी।
उसने बेल बजाई।
देर रात तक राजा को नींद नहीं आई। दिव्या का चेहरा आँखों के सामने रह-रह कर आता।
दूसरे दिन निरूपमा का फोन आया।
माफ करियेगा आपसे मिल नहीं पाई।
क्या इसका कोई इलाज नहीं है।
सब किया। अब आप कब आयेंगे?
क्या बताऊँ। इस इतवार को तो बाहर जाना है। गुरूवार को देखता हूँ।
उस दिन मेरी मीटिंग है। पर फिर भी कोशिश करूंगी जल्दी आ जाऊँ।
गुरूवार को पहुँचा तो दिव्या बैठक में मिली।
वह उसे रदीफ समझाता रहा जैसे हिन्दी कविता में तुकान्तँ होता है।
अचानक दिव्या ने घंटी बजाई पर बाई नहीं आई।
क्या हुआ .....?
सर नोसिया हो रहा है, टायलेट जाना है।
आओ मैं ले चलता हूँ।
राजा ने उसकी कमर में हाथ डाला और उसे टायलेट ले गया। बाहर आई जब तो दिव्या हाँफ रही थी।

सहारा देकर वह उसे ला रहा था कि निरूपमा आ गई ..... क्या हुआ?
नोसिया हो रहा था इसे।
बाई कहाँ गई?
तभी बाई आ गई .... मैं जैकी को घुमाने ले गई थी। परेशान कर रही थी।
राजा समझ गया दिव्या को सहारा देना निरूपमा को अच्छा नहीं लगा। वह कुछ देर बैठा फिर वापस आ गया।
दूसरे दिन निरूपमा का फोन आया।
मैं आ रही हूँ।
मुझे नहीं मिलना।
जानती हूँ। कल दिव्या को तुम्हारे हाथों में देखकर परेशान हो गई थी।
तो क्या करूं किसलिए आना है।
माफी मांगनी है।
फोन पर मांग लो।
नहीं! या तो आप आओ या मैं आती हूँ।
शाम को आता हूँ।
उसे पता था निरूपमा से अधिक दिव्या परेशान होगी। शाम को पहुंचा तो दिव्या ने सिर झुका लिया। आपको मेरे कारण कितना सहना पड़ा। सच में अपाहिज का कोई जीवन नहीं होता।
क्या। सहना पड़ा? मुझे किसी ने कुछ नहीं कहा।
बताओ आज क्या लिखा .....
अचानक दिव्या मुस्कुरा दी
ए चाँद तू देर बहुत, पर लुभाता बहुत है
सीने से लगा ले मुझे, प्यार तुझ पर आता बहुत है।
मुस्कुरानें पर तुम बेहद सुंदर लगती हो। राजा ने कहा तो पलकें झुका ली दिव्या ने।
तुम बहुत बढ़िया लिखती हो।
दिव्या चाहती थी उसके कांधे से लगे तभी बाई आ गई ....
आपको दीदी बुला रही हैं ....
सिर सहलाया राजा ने दिव्या का आता हूँ।
वह ऊपर गया तो देखा तीन-चार कमरे हैं ऊपर वह सोच रहा था कि निरूपमा आई

ये लाइब्रेरी है मेरी।
करीने से किताबें लगी हुई थीं।
मैंने आपके उपन्यास पढ़े हैं।
बढिया।क्या खायेंगे आप .....
चाय चलेगी।
तभी बाई ने बहुत सारा नाश्ता चाय-पानी टेबिल पर सजा दिया।।
खाइये।
नहीं खाना मुझे
माफी मांग रही हूँ।
राजा ने बिस्किट लिये।
जाता हूँ आज बस से आया हूँ।
मेरा ड्रायवर आपको छोड़ देगा।
राजा ने उसे देखा नया उपन्यास दीजिए।
वहाँ से ले लीजिए।
वैसे आप करती क्या हैं।
बुटिक है। सौ लोग काम करते हैं।
इतना बड़ा
हमारे कपड़े लंदन, अमेरिका सभी जगह जाते हैं।
अब समझ में आया इतनी कहानियाँ आपको मिलती कहाँ से है।
मेरा बुटिक पाँच किलोमीटर पर ही है आइये आपको दिखलाती हूँ। फिर आप चले जाइएगा।
बुटिक का नाम पढ़ा दिव्या एन्टरप्राइजेज
बहुत बढ़िया। सामने दुकान थी और पीछे गोदाम था। बहुत सारी मशीनों पर काम चल रहा था। कहीं पैंकिंग भी चल रही थी।
सभी ने निरूपमा को देखा और काम करते रहे।
यहां कोई कर्मचारी नहीं है। ये सब परसेंटेज पर काम करते हैं।
क्या ?
हां दिव्या नहीं चाहती कि कोई भी किसी को छोटा समझे। भाइयों ने यह दुकान दिव्या को दी है।
ओह।

हाँ मेरी तो रायल्टी ही इतनी है कि आराम से खर्च चल जाता है। और मैं एक इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ती हूँ।
मेरी बेटी वहां पढ़ती है। श्रेया।
श्रेया सिंह तो नहीं।
हाँ।
बहुत होशियार है।
अब चलूं।
मेरा आफिस तो देखा ही नहीं।
तभी एक लड़की कोसे का कुर्ता लेकर आई।
ये आपके लिये।
राजा ने निरूपमा को देखा।
देख लीजिए कहीं छोटा न हो।
आफिस में वे दोनों ही थे।
लाइये मैं नाप देखती हूँ।
वह उसके कंधे से लगाकर देख रही थी। परफ्युम से राजा मदहोश हुआ जा रहा था। अचानक वह मुड़ा और निरूपमा उसकी बाहों में थी।
क्या करते हो?
बहुत जेलस हो कल दिव्या को मेरी बाहों में देख नहीं पाई।
अच्छा ऐसा कुछ नहीं खुशफहमी है आपको। वह छिटक गई थी।
कल मेरे आफिस आना ढ़ाई बजे लंच साथ करेंगे। वह बिना कुर्ता लिए चला गया था।
दूसरे दिन निरूपमा शास्त्री भवन पहुँच गई थी।
आओ दो मिनिट काम खत्म करके चलते है। वह फाईलों पर साईन कर रहा था।
चपरासी फाइल लेकर चला गया।
केंटिन चले।
आज रात बाहर जा रहा हूँ। एक स्कूल का इंस्पेक्श न है। वह खाते समय बोल रहा था।
तुमने शादी नहीं की।
की है। दिव्या। के कारण मुझे अलग रहना पड़ रहा है।
मतलब ....
मतलब होटल में दो दिन मिलते हैं।

ओह!
दिव्या को हर पल खुश रहने को डाक्टर ने कहा है।
और तुम।
मैं एक कठपुतली। दुकान, घर, कालेज फिर लेखन।
मैंने तुम्हे क्यों बुलाया पता है ....
हाँ। अब घर नहीं आ पाओगे।
हां दिव्या आते समय किन अजीब नजरों से देख रही थी। एक कप चाय ही तो पी थी।
समझा दूंगी आप शहर से बाहर हैं।
अब मैं जाऊँ।
राजा मौन था कैसा अजीब प्रेम था यह।
निरूपमा कितनी सहनशील हे राजा सोच रहा था। लग रहा था कि आयेगी नहीं। पर एक छोटे से आमंत्रण को स्वीकार कर लिया। निरूपमा को फोन लगाया।
ठीक से पहुँच गई।
हां। शाम को एक प्रोग्राम है बस उसी के लिये कुछ लिख रही थी।
मत इतना गुरूर कर, दो दिन में ढ़ल जायेगा।
रूको कहीं मुझ पर तंज तो नहीं।
हाँ है। पर माफी नहीं मांगूंगी।
मुझे पता है मगरूर हो। किस्से सुने हैं तुम्हारे।
राजा मुझे लगा था दिव्या को संभालने में मदद करोगे पल्ला झाड़ लिया।
मुझे मेरा कुर्ता चाहिए।
ड्रार खोलिये। मिल जायेगा। जब आप हाथ धोने गए थे पैकेट रख दिया था।
बताया क्यों नहीं जाते समय।
भूल गई। वैसे मैं होटल पैराडाइज में शनिवार और इतवार मिलती हूँ। रूम नंय दो सौ दस। वापस आने पर मिलता हूँ।
ड्रार खोला तो पैकेट मिल गया था।
घर जाने पर रश्मि ने पूछा कुछ खरीदा क्या ?
नहीं एक मित्र ने दिया है।
वाह! रेशम की कारीगरी श्रेया बोली। पापा ये मेरी मैडम की दुकान का लेबल है।
हां।

वो मुझे पढ़ती है बहुत सुंदर है मां।
उनकी बहिन को गजल सिखाई थी, इसलिए दिया। मेरी तैयारी कर दो ट्रेन है।
सब रख दिया है।
एक हफ्ते बाद राजा लौटा तो डाक देखी पार्सल था। खोला तो घड़ी थी।
वापस भेज रही हूँ। इन्होने पर्स में घड़ी देख ली थी शुबहा कर रहे थे। इसलिए कहा अपने रखने के लिए दी थी। बिल पर आपका नाम था।
बिल डिब्बे में से निकालना भूल गया था।
कितनी दबिश होती है महिलाओं पर।
एक दिन निरूपमा का फोन आया .... कैसे हैं आप?
ठीक हूँ, आता हूँ किसी दिन।
किसी दिन नहीं आज ही। दुकान के ऊपर वाले हाल में दिव्या के गजल संग्रह का विमोचन है। आपको समर्पित है पूरे परिवार सहित आइये।
आज राजा के साथ रश्मि और श्रेया भी थे।
'धुंध थी जो छंट गई'
आज दिव्या की खुशी चेहरे से झलक रही थी उसके माँ, पिताजी, दोनो भाई, भाभियाँ, भतीजे और भतीजियाँ भी आये थे।
बहुत सम्मान के साथ राजा को मंच पर ले जाया गया। सभी हैरत से उसे देख रहे थे।
सरस्वती वंदना के बाद किताब का विमोचन हुआ। राजा ने कहा 'जीवन आसान नहीं होता जबकि दिव्या के सामने कई चुनौतियाँ थी। पढ़ाई में दिव्या हमेशा मेरिट में आई। हर तरह से आज दिव्या के समक्ष जितनी भी धुंध थी छंट गई।'
इसमें प्रतिभा थी मैंने तो केवल उत्साह बढ़ाया। आज जो सम्मान दिया उसके लिए आभारी हूँ।
राजा बैठ गया।
निरूपमा ने सबका आभार प्रदर्शन किया। आज दिव्या एन्टरप्राइसेस के लोग बेहद खुश थे। हैरान भी कि दिव्या गजलकारा है।
आनन-फानन में उसकी किताबें सभी ने खरीद ली।
बहुत अच्छा लगा सभी से मिलकर रश्मि बोली।
एक तो लड़की ऊपर से अपाहिज रश्मि संजीदा हो रही थी।
श्रेया सो गई .....

देखती हूँ।
आज दिव्या को देखकर सभी दुखी थे बोली भी तो रूक-रूक कर-
'सर आज एक शिक्षा अधिकारी होते हुए भी इतना अच्छा लिखते हैं जब दी ने मुझे कहा वो तुम्हें सिखाने आने वाले हैं तो मैं हैरान हो गई। इसलिए मैंने उन्हें अपना गजल संग्रह समर्पित किया है।'
बहुत तालियाँ बजीं।
और दिव्या के पिताजी की नजरों में कितना सम्मान राजा ने देखा।
वे बोले मैं हमेशा दिव्या से बोलता था मानव जीवन अमूल्य है पर आज वह बहुत खुश है इतना स्नेह इतना सम्मान पाकर। उनका गला भरने लगा था। राजा ने उन्हें पास बिठाया था।
राजा ने देखा विधि के मिस काल थे और फोन साइलेंट पर कर दिया था।
घड़ी देखी बारह बज रहे थे।
एक बार रिंग करके देखता हूँ।
घंटी जा रही थी।
आप कहाँ है? कितनी बार फोन लगाया।
प्रोग्राम में था।
दिल्ली में हूँ भाई के पास।
कहाँ?
मयूर विहार में।
मेरे घर के पास है।
सामने पार्क में मिलते हैं।
तभी रश्मि आ गई किससे बातें कर रहे थे।
दोस्त था।
सुबह राजा उठा। फटाफट तैयार हो गया।
आज जल्दी आफिस जाना है
नहीं किसी से मिलकर आता हूँ।
चाय पी ली है।
रश्मि को हैरानी हुई। रोज दस बार उठाने पर बिस्तर छोड़ने वाले आज सुबह खुद ब खुद तैयार हो गये।
सामने ही पार्क था।

विधि सामने की दिख गई
कब आई?
कल लगा फोन करूं या नहीं।
आज जा भी रही हूँ।
क्या हुआ था?
शायद हम जब उस रात साथ थे उन्होंने हमें देख लिया था। पैसे लेने आए थे। उस दिन भी लड़ रहे थे। घर में क्यों सोने दिया?
मामी ने कहा था इसलिए।
आपका शक सही है। उस दिन मैं भी गुस्सें में बोली थी।
बस यही सुनना था मुझे। मैं खुद देख चुका हूँ। पैसे लेने आया था माँ की छुट्टी होने वाली थी।
वह अंदर गये और गोली मार ली।
कल से स्कूल जाना है।
विधि माफ कर दो।
नहीं मेरी गलती थी सजा भी मुझे मिली।
ये लो नीलू उठ गई है। भाभी आ गई थी।
ये राजा हैं।
नमस्ते घर चलिए सामने ही तो है।
विधि के भैया भी मिले। मैं सोमेश।
भाभी ने पानी दिया, चाय बनाई।
ये तो आ ही नहीं रही थी। मैं ही लेकर आई।
कभी-कभी पता ही चलता कि जीवन में क्या हो रहा है?
यहाँ चाहो तो आ सकती हो। राजा ने कहा।
नहीं मैं वहीं ठीक हूँ
बाहर तक सोमेश छोड़ने आये।
वह आफिस देर से पहुँचा। निरूपमा का फोन आया आज के पेपर देखे ... आप ही आप अभी देखता हूँ। हितवाद से लेकर टाइम्सन ऑफ इंडिया में वही था। दिव्या की फोटो बेहद सुंदर आई थी।
क्या यह ठीक नहीं हो सकती?

वह सोच रहा था फिर काम में डूब गया। किशोर का फोन आया 'मुझे बुलाया क्यों नहीं?' यार सुबह ही पता चला था कि आज विमोचन है। कम से कम ग़ज़ल की किताब ही दे देना।

ले लेना मुझे दस मिली है।

बढ़िया हीरो।

लगा जैसे ईष्या का भाव है।

उसके बहुत से मित्रों के फोन आये आज पता चला आप लिखते भी है।

अचानक हितवाद से फोन आया सर इंटरव्यु लेना है आपका।

लंच समय में आ जाइये।

मैं कोमल हितवाद से आई हूँ ।

आइये।

वह अपना कैमरा लगाती रही। इतने में राजा ने वाशरूम में जाकर बाल संवारे।

आप कब से लिख रहे है?

यही दसवीं से। पर सबसे छुपाकर। पिताजी को पसंद नहीं था। सो 'राजा' के नाम से लिखता हूँ। राणा परिहार नाम है मेरा।

आप ने दिव्या जी को कैसे लिखने को प्रेरित किया।

नहीं वो पहले से ही लिखती थी। बस मैंने सुधार किया।

दिव्या जी ने जब रचना आपको समर्पित की तो कैसा लगा?

नहीं बता सकता। उस क्षण मेरी आंखें भर आई थीं। इतना सम्मान पाकर। मैं उसके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

वह अपना सामान समेट कर चली गई।

तभी फोन की घंटी बजी।

अभी और भी कुछ बाकी है क्या?

नहीं इंटरव्यू बढ़िया हुआ। कल दिल्ली दूरदर्शन पर रिले होगा।

नीचे आओ बढ़िया खाना लेकर आई हूँ।

ऊपर क्यों नही आई?

फिर तुम सहज नहीं रह पाते।

जाऊँ या आ रहे हो।

सुबह से कुछ नहीं खाया।

कार में बैठ कर उसने फुलके और मेथी की सब्जीं खाई।
मजा आ गया। उसने हाथ धोये और निरूपमा की साड़ी के आँचल से पोंछ लिये।
क्या करते हो।
मैं रश्मि की साड़ी से इसी तरह हाथ पोंछता हूँ।
मैडम सी.डी. बन गयी ड्रायवर आ गया था।
ये एक आप ले लो। मैं जाती हूँ क्लान है मेरी।
वह काम में व्यस्त हो गया था। शाम को घर पहूँचा तो श्रेया ने बेग से टिफिन निकाला।
मां पापा ने आज खाना नहीं खाया देखो।
हां आज जले हुए पराठे खाने से बच गया।
माँ ने सुन लिया तो कल से ये जले हुये पराठे भी नहीं मिलेंगे।
ये ले सी.डी. आज इन्टरव्यू हुआ था।
वाह! आप तो हीरो बन गये।
श्रेया सी.डी. लगाकर देखती है।
इन दिनों निरूपता बेहद खुश रहती है। कुछ-कुछ गुनगुनाती रहती। दिन जैसे पखेरू बन कर उडे जा रहे थे। बात-बात पर चिढ़ने वाली, अब धीरज से सब सहती।
सभी को उसमें यह परिवर्तन देख कर हैरानी होती।
दी आजकल क्या बात है। बेहद सुन्दर होती जा रही हो।
हां वह बेखुदी में बोली। मेरा उपन्यास बहुत जल्दी लांच हो रहा है।
उसकी हजार कापी पहले ही बिक चुकी है।
सच किसने खरीदी।
तुम्हारे जीजु ने।
पर तुम्हारा तो अलगाव हो चुका है।
केवल तुम्हें दिखाने के लिए। वरना हम हमेशा साथ थे। मेरा तो आठ साल का बेटा भी है।
तभी अचानक दिव्याख खड़ी हो गई। उसने निरूपमा का गला एक हाथ से दबोच लिया। निरूपमा चिल्लाने लगी। बाई दौड़ी-दौड़ी आई और निरूपमा को छुड़ाया।
दिव्या के कमरे से निरूपमा आ गई पर बहुत डर गई। उसने राजा को फोन लगाया।
क्या हुआ?
बिल्ली ने नोच लिया।
इस समय तो रात हो गई सुबह आता हूँ।

डाक्टर से टिटनेस का इंजक्शन लगवा लो।
स्ट्डी में बंद हूँ।
डरो मत, मैं उसे फोन करता हूँ।
दिव्या को फोन लगाया।
सुनो 'धुंध जो छंट गई' को पुरस्कार मिला है।
दिव्या चुप थी।
कहां से?
शिक्षक एकडेमी से ...
प्रथम पुरस्कार है ...
कल पाँच बजे लेने आ रहा हूँ।
नहीं जाना मुझे कही कहकर दिव्या ने फोन रख दिया था। पर वह राजा की आवाज सुनते ही शांत हो गई थी।
वह सुबह निरूपमा के कमरे में गई तो निरूपमा नहीं थी।
बाई से पूछा दी कहाँ है?
पता नहीं बोल कर नहीं गई।
उसने माँ को फोन लगाया।
दी पता नहीं कहाँ चली गई।
आ जायेगी दुकान पर होगी।
आती हूँ।
गुड़गांव से दिल्ली तक जाने में देर लगती है। जाम लगता है।
माँ पिताजी के साथ आई।
क्या हुआ पिताजी ने पूछा?
दिव्या ने सब कहा ....
तुम्हारे कारण वह अपने परिवार से दूर थी। अनिल बहुत सहनशील है। तुम्हारे लिए उसने सब कुछ सहा। पर अब उसका बेटा उससे दूर रहने को तैयार नहीं है।
मुझसे छिपाया क्यों गया?
तब तुम बीमार थी न तुम हमारे साथ रहना चाहती थी न भाइयों के साथ।
माँ दी कहाँ है?
होटल पैराडाइस में।

मुझे वहाँ ले चलिए।
शाम को चलेंगे वहाँ तुम्हारा सम्मान है।
शाम को पहुँचे राजा भी वहाँ थे। शिक्षक परिषद से चार लोग आये थे।
माँ पिताजी के बीच में दिव्या बैठी थी मंच पर तभी निरूपमा पति अनिल और बेटे साहिल भी साथ में थे।
दिव्या शांत थी क्योंकि राजा भी मंच पर थे।
ग्यारह सौ रूपये, मोमेंटो और सर्टिफिकिट थे।
राजा ने कहा 'धुंध जो छंट गई' को प्रथम पुरस्कार मिलने पर मुझे आश्चर्य हुआ। किताब मैंने भेज दी और भूल भी गया। पर जब परिषद का पत्र आया तो मुझे बहुत खुशी हुई।
दिव्या रो रही थी।
साहिल यहाँ आओ।
डरते-डरते साहिल पास आया।
जाओ मौसी को छुप कराओ।
दिव्या ने उसे बाहों में भर लिया।
निरूपमा बोली मुझमें सत्य बोलने का साहस नहीं था। एक दिन राजा होटल पैराडाइस में आये अनिल और साहिल के साथ मुझे देखकर हैरान हो गए।
एक लड़की के कारण पूरा परिवार अलग रहने को विवश है। और उन्होने कहा इस पार या उस पार। आज मैं अपने परिवार के साथ बहुत खुश हूँ।
पिताजी बोले राजा के हम आभारी हैं।
मेरी दोनों बेटियाँ आज सुखी हुई।
पिताजी का गला भर रहा था। अनिल ने कहा हमने प्रतिक्षा की समय सब ठीक कर देता है। शादी एक पवित्र बन्धन है हमने उसे हर दर्द सहकर निभाया।

---oo---

दो साल

सुनाओ क्या लिखा है..
मैं खाना बनाना नहीं जानती हूँ।
तो खायेंगे क्या?
होटल से मंगवा लीजिए। कल बाई ढूंढ लेगें।
कल कल सुनते हुए पूरा महीना हो रहा है।
पैसे तो मैं ही दे रही हूँ आपको तकलीफ क्या है?
पता नहीं कहाँ फंस गया भुवन बडबडा रहा था।
ठीक है आज बस इतना ही।
मनोरमा देवी को हैरत से देखा किशन ने।
कल ही टायपिस्ट के पद पर उसे रखा गया था। दस हजार महीने पर। कल से आज तक केवल एक पैरा लिखवाया था।
जाओ रानी से चाय लेकर आओ।
जी।
अंदर है। बहुत बड़ा घर। वह भीतर गया।
क्या है?
वो मेम चाय मंगा रही है।
वो रखी है ले जाओ।
ट्रे में टिकोजी से ढंकी केतली और दो कप रखे थे।
मैं ले जांऊ।
कहीं के साहब हो। जैसे हम वैसे तुम।
उसने ट्रे उठाई और स्टडी में आया।
चाय मेम।
कप में डालो।
ये भी करना होगा। शक्कर एक ही चम्मच।
उसने उन्हें चाय दी।
तुम नहीं पीते अपने लिए भी बनाओ।
पांच बजे एक गोष्ठी में जाना है। ड्राइवर से कहो कार निकाले।

ओह तो ये है दस हजार का रहस्य।

वो तैयार होकर आई। किशन उन्हें देखता ही रह गया। क्रीम रंग की सिल्क साड़ी। कोहनी तक ब्लाउज। एक हाथ में घड़ी और एक हाथ में सोने की चूंडिया। बड़ा सा जूड़ा। कुल मिलाकर किशन उन्हें देखता रह गया।

होमसाइंस कालेज का आडिटोरियम खचाखच भरा था। वे अध्यक्ष थीं। बहुत सी छात्र छात्राओं ने कवितायें सुनाई। किशन भी बैठा सुन रहा था। प्रिंसिपल ने उनका नाम लिया और कहा . .. मनोरमाजी ने पैंतीस साल इस कालेज में सेवाएँ दीं। रिटायर हुए दस वर्ष हो चुके है। हम जब भी इन्हें बुलाते हैं ये सहज हमारे आमंत्रण को स्वीरकार कर लेती हैं। ये अब एक बहुत बडी साहित्यकार हैं पर ये वैसी ही सहज और सरल है।

मनोरमा देवी खड़ी हुई। धन्यरवाद प्रिंसिपल साहिबा मैं अभी भी यहीं से पेंशन पाती हूँ। इसलिए अभी भी इस कालेज के प्रति मेरे दायित्व हैं।

आप सबने अपनी कविताएं सुनाई। बहुत बेहतर। पर प्रेमचंद को ध्यान से पढ़िये कल्प ना केवल नमक के बराबर ही ठीक लगती है, जीवन से निकट होगी तो रचना शाश्वत होगी।

तीन महीने पहले मुझे पता चला कि मुझे ब्रेस्ट कैंसर है। पति है नहीं, बेटा विदेश में क्या होगा?

डाक्टहर से पूछा उसने कहा कुछ भी हो सकता है। एक दिन से लेकर एक साल ग्यारह साल तक भी।

मैंने आपरेशन कराया, बेटे को बताया तक नहीं, अच्छी हूँ। कीमो के बाद बाल झड़ गये थे पर अब मैं ठीक हूँ।

उतार-चड़व जीवन में आते हैं डरने से बात नहीं बनती। आप सब और भी अच्छा लिखिए मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ है।

तालियों से हाल गूंज उठा।

मैं छात्राओं की भविष्य निधि के लिए एक लाख रूपये का चैक अर्पित करती हूँ।

हाल पुनः तालियों से गूंज उठा।

वो नीचे उतरीं और पर्स से एक लाख रूपयों का चैक शालिनी प्रिंसिपल को दिया।

किशन ये सब देखकर हैरत में था। सारी प्रोफेसर उनके आगे पीछें थीं। किसी के हाथ में उनकी शाल थी। किसी के हाथ में फूल मालायें। सभी कार तक उन्हें छोड़ने आये।

शालिनी ने खुद सम्मान से दरवाजा खोला।

किशन भी सामने बैठ गया। आते समय वो सोच रहा था नहीं करनी उसे नौकरी। उसने घर में कभी चाय नहीं बनाई थी पर अब वह बिलकुल बदल गया था।

अब तुम जाओ ड्रायवर तुम्हें छोड़ देगा।

मैं मोटरसाइकिल से आया हूँ आपको भीतर तक छोड़ दूँ।

मनोरमा ने उसे देखा।

ठीक है। पर सुबह जल्दी आने की जरूरत नहीं, चार बजे आना।

सुबह उठा पेड़ों में पानी डाला। उसकी दो बेटियाँ प्रज्ञा और ऋचा।

संस्कृठ पढ़ाता है दसवी तक और उसकी पत्नी माधुरी बारहवीं तक गणित पढ़ाती है। माधुरी को पन्द्रह हजार मिलते हैं और उसे दस हजार। तीन बजे तक स्कूल रहता है। इसलिए उसने मनोरमा के यहाँ टायपिस्टप की नौकरी कर ली थी।

वह सोच रहा था कि उसका फोन बजा।

रानी बोल रही हूँ आप आ सकते है क्या ?

क्या हुआ?

कुछ नहीं मैम को बुखार आ गया।

आता हूँ।

सुबह-सुबह कहाँ जा रहे हो?

मेम को बुखार है।

डाक्टर हो!

कल ग्याबरह बजे आये और आज सुबह फिर से जा रहे हो।

माधुरी जल्दी आ जाऊंगा।

नहीं नाश्ता करके जाओ।

मालूम था नहीं मानेगी सो थोड़े पोहे खाये।

चार पांच किलोमीटर ही था घर।

क्या हुआ?

डाक्टर आ गये थे दवाई दे दी है।

ये पानी की पट्टी बदलों मैं मैडम को दवाई दे दूं।

वह पास ही कुर्सी पर बैठकर पट्टी रख रहा था।

तभी मनु मनु की आवाज आई।

दरवाजे पर एक गौर वर्णीय वृद्ध खड़े थे। ऊँचे पूरे।

तुम कौन हो?
जी मैं।
मामा ये टाइपिस्ट? हैं। भला हो मैडम का जो इन्हें भी रख लिया। बिचारे फोन करते ही आ गये।
मनु को बुखार आया कैसे?
कालेज गई थीं। बस वो मनोरमा को दवाई दे रही थी।
इसे बाहर जाना मना है फिर जाने का मतलब।
भाई जी कल ठीक थी मैं मनोरमा जी बोली।पता नहीं आज कैसे बुखार आ गया?
उन्होने किशन को पट्टी रखने से मना कर दिया।
तुझे पता है थकना नहीं है। खैर ठीक हो जाओगी।
वो उसके सिरहाने बैठे थे। पचहत्तर साल के हैं पर एकदम फिट।
ये अपना ध्यान ही नहीं रखती। मामा चाय ला रहें हैं आपकी।
मेरे साथ आइये।
यह रानी के पीछे पीछे स्टडी में आ गया।
पूरी रात सोई नहीं है ये रखी हैं कहानी टाइप कर दीजिए।
क्या ?
हाँ प्रकाशक का फोन आया है।
वह शाम को आने वाला है, हम खाना बनाने जा रहे है आपका भी बना लेगें।
मुझे घर जाना है।
नहीं आज कहीं नहीं जाना है। सामने कुर्सी पर बैठ जाइये। अरे हमें क्या देख रहे हैं। हमें पढ़ना लिखना नहीं आता वरना आपसे नहीं बोलते।
ठीक है। घर पर बता देते हैं।
और हां मैडम जी के लिए खिचड़ी बना रहे है आपके लिये रोटी बना देंगे।
बना दीजिए।
उसने माधुरी को फोन किया। आज बहुत काम है।
अरे एक इतवार मिलता है अब घर का सामान कौन लायेगा?
हम शाम को ला देंगे।
पानी रख कर रानी चली गई।
सौ पेज थे।

भुवन वाली कहानी थी। निशा माडलिंग करती थी। इसलिए वह रसोई में नहीं जाती थी। नाखून टूट जायेंगे। सब्जी काटने से उंगलिया कठोर हो जायेगी। आटा सानने से कठोर हो जायेगें हाथ। ना बाबा। मुझे नहीं करना यह सब।

फिर शादी क्यों की बच्चे नहीं करना फिगर खराब हो जायेगा।

और एक दिन भुवन परेशान होकर कहीं चला गया।

किशन टाइप करने में इतना मगन था कि एक बज गया।

आपका खाना यहाँ जाऊँ?

यहाँ नहीं रानी हम अछूत नहीं है।

किशन खड़ा हो गया।

आता हूँ।

रानी ने दो थाली लगाई।

रानी के हाथों में जादू है जादू। मेरी दो दो बहुयें हैं पर पेट तो रानी के हाथ के खाने से ही भरता है।

खीर, भरता, पापड़, अचार, दाल, रोटी पर शुद्ध घी, दही सब कुछ था।

मामा जल्दी-जल्दी, में एक ही सब्जी बना पाये हैं।

वह गरम गरम रोटी परोस रही थी।

अच्छे से खाना अभी तो ना जाने कितना टाइप करने को बचा है।

बस बीस पन्ने बचे है चार बजे तक हो जायेंगे।

नहीं पचास तो हमने आपको दिये ही नहीं थे। रात का खाना भी यहीं खाना है आपको।

देखा इस चुटकी की चतुराई।

मामा हँस पड़े।

मामा चावल ....

शुगर है मुझे पर थोड़े दे दे।

आप अच्छे से खा लो।

एक इतवार को ही किशन माधुरी और बच्चों के साथ खाना खाता था। रोज तो सब स्कूल में होते थे।

मैं मैडम के कपड़े बदल दूं। और उन्हें भी खाना खिला दूं।

तूने कुछ खाया कि नहीं मामा बोले।

नहीं मामा खाने के बाद नींद आती है सो देर से सबके बाद।

अन्न पूर्णा है रानी।
खीर ठीक तो लगी मामा।
अच्छी है पर बहुत खाना मना है।
आप ले लो।
नहीं काम करना है। उसने रानी को देखा।
नेपकीन कहाँ है?
वह फिर टाइप करने बैठ गया।
वह थक गया था लेटे लेटे दीवान पे लेट गया। उसे नींद आ गई।
चार बजे रानी आई देखा तो वो सो रहा था।
उठिए।
एक इतवार मिलता है तो मुझे सोने दो माधुरी।
ठीक है। सोइये हम प्रकाशक महोदय को मना कर देते है।
नींद खुलते ही उसे याद आया कि उसे तो टाइप करना है।
वो जो दाता हैं न कल एक लाख का चैक दे आईं हैं वह इन्हीं। प्रकशक महोदय ने दिया था। हम आपको नहीं जगाते पर मजबूरी है।
एक कप चाय ला दो।
आप हाथ मुँह धो लीजिए लाते हैं।
ओह रानी कितनी मेहनती है। सुबह से काम कर रही है।
पचास पेज टाइप करते करते नौ बज गये।
खाना खा लीजिए।
नहीं। पेपर करीने से लगा दिये हैं फाईल में।
वह बाहर आया मोटरसाइकिल शुरू की ही थी कि रानी भागी आई।
अब क्या है?
मेम बुला रही हैं।
जी।
वो प्रकाशक दस मिनिट में आ रहे हैं।
कृपया उन्हें देकर ही जाइए।
जी।
वो ग्यारह बजे आये।

बहुत बढ़िया।
मनोरमा जी कहाँ है।
उनकी तबियत ठीक नहीं।
ये पचास हजार का चेक है। उन्हें दे दीजिएगा।
पांडूलीपि देखकर ही वह खुश हो गया था।
मैडम ये चैक है।
रानी को दे दो अलमारी में रख देगी।
पूरा घर देखा पर रानी दिखी नहीं।
रानी पता नहीं कहाँ है
पागल है छत पर होगी।
वह ऊपर गया। वह रो रही थी।
क्या हुआ ....
आज बादल हैं ना। माँ नहीं दिखी।
माँ
एक तारा है वो मेरी माँ है।
ठीक है लो इस चैक को संभाल के रख दो।
रानी ने आँसू पोंछें और चैक ले लिया।
उस कहानी में भुवन का क्या हुआ।
तुम्हें पता है
हाँ मेम लिखती बाद में हैं पहले मुझे सुनाती हैं पर रात को मैं सो गई थी।
उसकी पत्नी को फिल्म में काम मिल गया और वह हिरोइन बन गई।
बड़ी सी कोठी में वह रहती थी कैंसर के मरीजों के लिए बड़ा सा अस्पताल बनवाया।
वहीं एक दिन भुवन पत्नी वैशाली से मिला। उसके साथ उसका बेटा था। वह उसे अस्पताल में छोड़ गया था।
मुझे तो तुम छोड़ गये थे। पर नहीं कभी तुम मेरे पति थे। तुम्हें अलग से सारी सुविधाएँ मिलेंगी।
वैशाली ने भुवन के मरने के बाद भी सिंदूर लगाना नहीं छोड़ा।
रानी। मेम बुला रही हैं।
तुम कब से हो उनके साथ।

पिछले दो साल से।
मैं उनको ट्रेन में मिली थी। मेरी माँ के बाद मैं मामी के साथ रहती थी। पर उसके भतीजे से वो मेरी शादी कर रही थी। मैं भाग गई। मेरे पास टिकिट नहीं थी। टी.सी. मुझे उतरने को बोल रहा था पर मेम ने मेरी टिकिट कटवा ली।
अब तुम कहाँ जाओगी?
कहीं भी नौकरी कर लूंगी।
मेरे घर में करोगी।
कौन कौन है आपके घर में।
मेरे पति नहीं है और मेरा बेटा अमेरिका में है।
ठीक है।
मर्द जात से बहुत डर लगता है।
मुझसे भी।
नहीं आप अच्छे है।
अब जाता हूँ।
बारह बज गये।
घर में माधुरी ने भी खाना नहीं खाया था।
उसने सब बताया कि मैडम ने एडवांस पैसे लिये थे और रात भर अपना उपन्यास लिखा। उनको बुखार आ गया। आज ही देना था इसलिए पूरे दिन कम्प्यूटर पर बैठना पड़ा।
आप थक गये होगें। मैं सामान ले आई हूँ।
चैन की सांस ली किशन ने। कल सुबह से स्कूल है।
नौ बजे वह क्लास ले रहा था कि फोन बजा-
रानी मैं क्लास में हूँ।
मैं मनोरमा।
जी।
कल चैक दिया नहीं रानी को।
दे दिया था। आता हूँ क्लास के बाद चैक तो उसी समय दे दिया था। किसी तरह तीन बजे वह पहुंचा तो रानी सामने ही मिल गई।
रानी वो चैक।
ये है। इसे वापस करके आइये। वरना वो फिर बीमार पड जायेंगी।

देखा मैं सुबह से पूछ रही हूँ बताने को तैयार नहीं।
मनोरमा देवी चिढ़ गई। बेकार की आपको ढंग किया।
देखिये फिर बिस्तर से उठ कर आ गई जरा सा चैन नहीं।
देखा छोटी सी है पर अकल कितनी है।
उसने चैक मनोरमा देवी को दे दिया।
अब मैं जाऊ सीधा स्कूल से आ गया था।
चाय पी लीजिए।
चाय बना रहे है रानी अंदर चली गई।
कल आपको बहुत काम पड़ गया।
अब आप कैसी हैं।
बिलकुल ठीक हूँ।
आज चार दिन हुए थे उसे आए।
आइये बगीचे में बैठते है।
कल जिस कहानी को मैंने टाइप किया लग रहा था कि वह सच है।
हाँ जब मैं एम्स में भर्ती थी वह भी भुवन को लेकर आती थी। तभी उसने बताया कि वह सब कुछ करने को तैयार थी बस दो साल रूकने को कहा पर वह नहीं माना। उसने दूसरी शादी कर ली। पर पता है कैंसर का इलाज धीरज से होता है।
पर उसमें आपने लिखा है कि सारा इलाज उसकी पहली पत्नी ने कराया।
हाँ उसके बच्चे कभी कभी मिलने आते थे।
रानी को आपने पढ़ाया नहीं।
पिछले साल पांचवी की परीक्षा दिलाई थी। पास हो गई। इस साल गैप देकर अगले साल आठवीं में बिठाना है।
आप कहें तो अपनी स्कूल में एडमिशन करा देता हूँ प्रायवेट पढ़ेगी तो कभी अच्छे नम्बर नहीं आयेंगे। छटवीं और सांतवी एक साथ।
उसे तो बहुत मनाना पड़ेगा। वो जो बाहर जाने से भी डरती है।
वो आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए। कल मैं अपनी बेटी ऋचा को लेकर आऊंगा।
रानी ने चाय दी।
वह समझ गई कि बात उसी की हो रही है वरना ये चुप नहीं होते।
रानी मेरा पर्स लेकर आओ।

मनोरमा देवी ने दो हजार रूपये निकाले और किशन की ओर बढ़ाये।
कल के ओवर टाइम के पैसे है।
रख लीजिये मेहनत के हैं रानी बोली।
रानी पर्स लेकर भीतर चली गई। उस दिन ट्रेन में इसकी सहायता करके मैं अपनी सहायता कर रही थी। आप्रेशन के बाद ये पूरा घर संभाल रही है।
कल आता हूँ।
दूसरे दिन ऋचा को लेकर किशन आया चार बजे थे।
ये तो बड़ी प्यारी बिटिया है। उस समय मनोरमा जी स्टडी में बैठी लघु कथायें लिख रही थीं।
यहाँ आओ मेरे पास।
ऋचा उनके पास आ गई।
उसने उन्हें नमस्ते किया।
कौन सी क्लांस में हो।
जी दसवीं में।
तभी रानी आ गई।
मैडम आपका फोन बज रहा है।
आती हूँ कहकर वे भीतर चली गई।
मेरी बेटी ऋचा।
बहुत सुंदर हो। रानी बोली।
मैं रानी हूँ आओ आपको घर दिखाऊँ।
कौन पड़ता है आपके मास्टरजी
हाँ माँ भी पढ़ाती हैं, घर बहुत साफ है।
हाँ मैडमजी को सफाई पसंद है।
ये लो बिस्किट खाओ।
नहीं अभी खाना खाया है, पापा ने कहा कल से तुम भी हमारे साथ स्कूल जाओगी।
पर मैडम जी को खाना कौन देगा।
मैं अच्छी हूँ। तुम्हारे लिए रिक्शा लगा देंगे।
मनोरमा जी बोली कोई नहीं जानता कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है।
रानी पढने में होशियार थी। बी.एस.सी. करके उसने पी.एस.सी. की परीक्षा दी।

तुम्हें पुलिस की नौकरी क्यों करनी है किशन ने पूछा।
मुझे पसंद है मास्टरजी।
ऋचा डाक्टर बन गई और प्रज्ञा इंजीनियर।
मेरी तीन बेटियाँ है माधुरी सबसे यही कहती।
पहले दिन रानी ने जब इंस्पेक्टर की ड्रेस पहनी तो मनोरमा जी देखती रह गई ये तू है डरी सी सहमी सी सीट के नीचे छुपी थी।
पारस को छूकर तो लोहा भी सोना हो जाता है। ये मिठाई और ये दूसरा डब्बा ।
ये माधुरी माँ के लिए।
वाह! तू भूली नहीं।
माँ हैं मेरी। मुझे पढ़ाया, बड़ी बेटी कहा। आँखे भर आई थीं रानी की।
उनसे मिलने के बाद कभी गगन में तारा नहीं ढूंढा।

---ooo---

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

जन्म - 22 फरवरी 1949, गोंदिया (महाराष्ट्र)

माता - स्व.श्रीमती चन्द्रकला गुप्ता

पिता - स्व.श्री शशि कुमार गुप्ता (एडवोकेट)

पति - डॉ. आर.एल. शिवहरे, से.नि.प्राध्यापक

शिक्षा - बी.ए. 1972, एम.ए. (हिन्दी), पीएच.डी.- सागर,
हिन्दी साहित्य, छायावादी काव्य के लक्षण।

पता - सी-13, एच.आई.जी. धनवन्तरी नगर, जबलपुर (म.प्र.)

संपर्क नं. - 0761-2674004, मो. 9425154961

संप्रति - वर्तमान में सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भोपाल सरकार।

पद 1. सदस्य - हिन्दी सलाहकार समिति (राजभाषा),
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार (नई दिल्ली)
2. सदस्य - रोटरी क्लब, मिड टाउन, जबलपुर
3. आजीवन सदस्य - 1. हिन्दी प्रचारिणी समिति, जिला छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
2. मध्यप्रदेश लेखक/लेखिका संघ, भोपाल (म.प्र.)

प्रकाशन - नौ उपन्यास प्रकाशित, सरिता, मुक्ता, चम्पक में कहानियों का प्रकाशन।
आकाशवाणी से कहानियों का प्रसारण।

सम्मान - 'उत्सर्ग' कहानी संकलन पुरस्कृत (होशंगाबाद की संस्था नर्मदापूरम से)।
काव्य संकलन - 'मणि दीप' प्रकाशित।
रहस्यमयी गुफा- पुरस्कृत (लेखिका संघ भोपाल से)
अनेक संस्थाओं द्वारा 50 से भी अधिक सम्मानों से सम्मानित

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-038-4
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध